पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

थैइथैइ

डॉ. फिल्मेका मारबनियांग

चार बहनों और दो भाइयों में सबसे बड़ी थैइथैइ ने अपना बचपन अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल में व्यतीत किया। पिता का अपना कारोबार था। व्यापार में आने वाले उतार-चढ़ाव के कारण घर पर खुले हाथ खर्चा नहीं हो पाता था। घर में नौकरानी रखने की हैसियत नहीं थी। वैसे भी पूरे गांव में एक-दो परिवार को छोड़कर किसी भी घर में नौकरानी की आवश्यकता नहीं थी। थैइथैइ की माँ का शरीर कमजोर रहता था। उनको पानी बहुत दूर से लाना पड़ता था। कपड़े भी वह नदी में ही जाकर धोती थी। जलाने के लिए लकड़ी का इंतजाम तो पिताजी करवा देते थे।

थैइथैइ के लिए खिलौने कभी खरीदे ही नहीं गये। टूटे डब्बे और ढक्कन उसके खिलौने होते थे। फटे कपड़ों से कभी–कभी माँ गुड़िया बना देती थी। वह थोड़ी बड़ी हुई तो माँ ने उसे चावल बनाना और बर्तन धोना सिखा दिया। अब वह घर के कामों में माँ का हाथ बँटाने लगी। सात साल की उम्र में उसने स्कूल जाना शुरू किया। स्कूल से आते ही वह अपना बस्ता रखती और घर के कामों में लग जाती। शाम को उसके सारे दोस्त खेलने के लिए गांव के एक मैदान में इकट्ठे हो जाते थे। अपने दोस्तों को खेलते देखकर उसका मन बहुत मचलता था। परन्तु वह क्या करती, उसके कंधे पर तो कई सारे दायित्व थे। अत: थैइथैइ अपने दोस्तों के साथ कभी खुलकर या मन भरकर नहीं खेल पायी। कभी–कभी वह माँ से बाहर खेलने की अनुमति मांग लेती थी। माँ उसे भेज देती थी। परन्तु उसे अपनी छोटी बहन को पीठ पर बांधकर साथ ले जाने को कह देती, जिससे माँ स्वतंत्र रूप से घर का काम कर सके। उस समय उसकी खुशी का कोई ठिकाना न होता। अपनी बहन को पीठ पर जाइनइत[1] से बांधती फिर एक छोटा शॉल ऊपर से बांध देती। वह गदगद हृदय से अपने दोस्तों के बीच पहुँचती। वहाँ वह मात्र दर्शक के रूप में ही खड़ी–खड़ी उनको कूदते-उछलते देखती और मानसिक रूप से उनके खेल में शामिल होकर बहुत खुश होती। इस प्रकार घर के कामों में व्यस्त रहने के कारण पढ़ाई से भी उसका ध्यान हट गया। उसके दोस्त पढ़ाई में उससे काफी आगे निकल गये। उसके भाई–

बहन में एक बहन, जो अधिक बीमार रहती थी, को छोड़कर सभी बड़ी कक्षाओं में आ गये थे। अब थैइथैइ माँ की तरह घर के कामों में अपना पूरा–पूरा समय देने लगी।

समय के साथ–साथ पिता के कारोबार में सुधार आया। थैइथैइ की दो बहनें और दोनों भाई आगे की पढ़ाई के लिए शहर चले गये। कुछ समय के बाद उन सबकी शहर में अच्छी नौकरी लग गयी। छोटी बहन गांव में ही रहती थी। वह रोज ऑफिस के लिए गांव से ही निकलती थी। थैइथैइ के जीवन में भी बदलाव आया। उसी गांव का निवासी शानबॅर नामक एक युवक से उसकी शादी की बात चली। उसके माता–पिता शानबॅर को बहुत पसंद करते थे। युवक बहुत शालीन और मेहनती था। हाँ वह ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। वह बढ़ई का काम बखूबी जानता था। लेकिन गांव के गरीब लोगों को बढ़ई से ज्यादा सरोकार नहीं होता। इसलिए शानबॅर को जो भी काम मिलता था, वह उसे ठुकराता नहीं था।

कुल, गोत्र आदि की जाँच-परख के बाद उसके माता–पिता ने बात आगे बढ़ा दी। इसके लिए पहले थैइथैइ के घर वालों को शानबॅर के घर जाना था। तय दिन को शाम के समय थैइथैइ के घर से उसके माता–पिता, मामा, मौसी, बुआ, उसके भाई और स्वयं वह शानबॅर के घर पहुँचे। बात–चीत बहुत अच्छे ढंग से सम्पन्न हुई। थैइथैइ के घर वाले बहुत खुश थे। यह उनके घर की पहली शादी थी। एक महीने बाद थैइथैइ के घर में शादी की तारीख पक्की होने की बात तय हुई। लड़की के घर में लड़के वाले आये, थैइथैइ और शानबॅर की
सगाई हुई। अगले दो महीने बाद शादी की तारीख पक्की हुई। दोनों की शादी हो गयी। शादी के बाद वे दोनों कुछ महीने थैइथैइ के घर में रहे। जैसे खासी समाज में होता है, माता–पिता के घर में सबसे छोटी बेटी रहती है। थैइथैइ अलग घर में रहने लगी। उसके घर की जरूरत के समान खरीदने में माता–पिता ने भी मदद की। थैइथैइ अपने इस नये जीवन में बहुत खुश थी। एक साल बाद उसका बेटा हुआ। अपने इस प्यारे परिवार पर वह जान छिड़कती थी।

कभी–कभी उसे अपना बचपन याद आता। तो वह मन ही मन निश्चय करती कि वह अपने बच्चों को उनका बचपन अवश्य जीने देगी। वह उनकी सुख सुविधाओं का पूरा ध्यान रखेगी। लेकिन उसे हमेशा इस बात का डर रहता था कि कहीं उसका यह सपना पूरा नहीं हो पाया तो! उसका पति जो गांव में ही रहकर मजदूरी करता है,उसकी आमदनी ही क्या होगी और क्या स्वयं वह घर के आर्थिक सुधार में सहयोग दे पायेगी। धीरे–धीरे सभी भाई–बहनों के घर बस गये। एक बहन जो पढ़ाई में आगे नहीं बढ़ पायी थी, उसकी

शादी एक सरकारी स्कूल के अध्यापक से हो गयी थी।

एक दिन उसके माता–पिता ने सारे बच्चों को घर पर बुलवाया। माता–पिता के अतिरिक्त घर पर दोनों मामा और तीनों मौसियां भी मौजूद थे। बैठक में सब लोग बैठ गये तो पिताजी ने सबका स्वागत किया। उन्होंने दोनों मामाओं के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट किया, क्योंकि आज उनकी उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण थी। फिर पिताजी ने अपने अतीत के बारे में बताया। भावुक होकर उन्होंने माँ के साथ शुरू की गयी अपनी नई जिन्दगी के संघर्ष के बारे में सबको बताया। उन्होंने यह भी कहा कि थैइथैइ ने उन कष्टों को देखा है, झेला है, जिनको अन्य बच्चों ने नहीं देखा ; क्योंकि कुछ वर्षों बाद उनका कारोबार अच्छे से चलने लगा था। पिताजी ने अपने बच्चों की प्रशंसा की, जिन्होंने अपनी मेहनत से अपने माता–पिता का नाम रोशन किया। दोनों मामा और मौसियों ने माँ और पिताजी के जीवन की सराहना की; क्योंकि अपनी मेहनत से उन्होंने बहुत तरक्की कर ली। उन्होंने गांव में ही नहीं बल्कि शहर में भी कई जगह जमीनें खरीद ली थीं। पिताजी ने अपनी संतानों में सम्पत्ति के बँटवारे का एलान किया। सम्पत्ति का सर्वाधिक भाग सबसे छोटी बेटी को दिया गया। जो भाई–बहन शहर में थे उनको वहाँ की जमीन दी गयी। थैइथैइ और उसका पति गांव में रहते थे। इसलिए उसे गांव की ही जमीन दी गई। भले ही उस जमीन का क्षेत्रफल अपेक्षाकृत बड़ा था परन्तु वह न तो उपजाऊ जमीन थी और न आर्थिक रूप से उसका मूल्य अन्य भाई–बहनों की जमीन के बराबर आ सकता था। थैइथैइ ने दिल से अपने माता–पिता को धन्यवाद दिया। उस समय उसके मन में बस एक ही विचार बार–बार आ रहा था कि मुझे किसी भी प्रकार से अपने बच्चों का बचपन और भविष्य दोनों सवाँरना है।

शब्दार्थ:

जाइनइत : बच्चे को पीठ पर लेते समय प्रयोग किया जानेवाला एक विशेष प्रकार का लंबा कपड़ा।

संपर्क-सूत्र:
एसिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग,सेंट एनथोनीज़ कॉलेज
शिलांग, मेघालय